पाठ - 8
इसरा और मेअराज

الدرس الثامن - هندي
الإسراء والمعراج

ताइफ़ से वापसी और वहां यातनाओं और तकलीफ़ों को सहन करने, अबू तालिब की वफ़ात और खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल पर कई तरह की मुसीबतें जमा हो गयीं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने दिलासा दिया। एक रात जबकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए थे। आपके पास जिबरईल अलैहिस्सलाम बुराक़ जानवर के साथ आए। बुराक़ घोड़े की तरह एक जानवर है जिसके दो बाजू होते हैं और यह बिजली की रफ़्तार से दौड़ता है। अतएव जिबरईल अलैहिस्सलाम ने उस पर रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सवार किया और उन्हें लेकर फ़लस्तीन में मौजूद बैतुल मक़्दिस ले गए। फिर वहां से उन्हें लेकर आसमान पर चढ़े। वहां आपने अपने रब की निशानियों में से बहुत सारी चीज़ों को देखा। आसमान ही पर पांच समय की नमाज़ें फ़र्ज़ की गयीं। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमा

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

पक है वह जात जिसने अपने बन्दे को रात ही रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा की सैर कराई जिसके आस पास को हम बरकत वाला बना रखा है ताकी उसे हम अपनी निशानीयां दिखाएं बेशक वह सुनने और देखने वाला है (सूरह बनी इसराइल आयत 1)

सुबह हुई तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी घटना को लोगों से बयान करना शुरु किया जिसकी वजह से काफ़िरों के झुठलाने और उपहास उड़ाने में इज़ाफ़ा हो गया। उसी समय मौजूद लोगों में से किसी ने आपको विवश करने के मक़्सद से बैतुल मक़्दिस की विशेषताएं बयान करने को कहा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके एक एक हिस्से की विशेषता को बयान करना शुरु कर दिया।

मुश्रिकों ने इन सवालों पर ही बस नहीं किया बल्कि उन लोगों ने कहा कि हमें कोई दूसरी दलील चाहिए। आपने फ़रमायाः कि मेरी मुलाक़ात मक्का की तरफ़ आने वाले एक काफ़िले से हुई। आपने आने का समय बताया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम बातें सच साबित हुईं। मगर काफ़िर अपनी दुश्मनी, बैर और न मानने की वजह से गुमराह हुए। मेअराज ही की सुबह जिबरईल अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और आप को पांचों नमाज़ों की कैफ़ियत और उनके समय बताए। इससे पहले नमाज़ दो रकअत सुबह में और दो रकअत शाम में मशरूअ थी।

इस मुद्दत में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दावत को केवल मक्का आने वालों तक सीमित रखा जबकि क़ुरैश बराबर हक़ से मुंह मोड़ते रहे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाफ़िलों से उन की क़यामगाहों में मिलते और उन्हें इस्लाम की दावत देते और उनके लिए इस्लाम की व्याख्या करते। आपका चचा अबू लहब आपके पीछेपीछे जाता और लोगों को आप से और आप की दावत से डराता था। एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वालों की एक जमाअत के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें इस्लाम की दावत दी तो उन लोगों ने आपकी बात को बड़े ध्यान से सुना और आपकी पैरवी करने और आप पर ईमान लाने पर सहमति ज़ाहिर की। मदीना वाले यहूदियों से सुना करते थे कि एक नबी के आने का समय क़रीब आ चुका है।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सामने दावत पेश की तो वे लोग समझ गए कि यही वह नबी हैं जिसका ज़िक्र यहूदी किया करते थे अतएव उन्होंने इस्लाम क़ुबूल करने में जल्दी की और कहा कि इस मामले में यहूदी तुम से आगे न बढ़ जाएं। ये 6 लोग थे। दूसरे साल मदीना के बारह लोग तशरीफ़ लाए। वे लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हुए तो आपने उनको दीन इस्लाम की बातें सिखायीं और जब वे मदीना वापस जाने लगे तो उनके साथ मुसअब बिन उमैर रजियल्लाहु अन्हु को क़ुरआन की शिक्षा और दीनी अहकाम सिखाने के लिए भेजा। अल्लाह की कृपा से इब्ने उमैर रजियल्लाहु अन्हु ने मदीना के समाज पर अच्छा असर छोड़ा। एक साल बाद जब मक्का वापस हुए तो उनके साथ मदीना के 72 मर्द और 2 औरतें थीं। वे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हुए और आपके हाथ पर दीन की मदद और उसके कामों को अंजाम देने पर बैअत की और इसके बाद मदीना वापस लौटे